Mardi 12 février 2013

HIN2B-09C

(Initiation à la littérature hindi moderne)

Cours-3

सहमे हुए – महीप सिंह

हाशमी के ठीक सामने हरजीत बैठता है । हरजीत के दायीं ओर लोबो और बायीं ओर शर्मा । वर्मा की जगह निश्चित नहीं है । कभी वह शर्मा के बायीं ओर बैठता है, कभी लोबो के दायीं ओर। दफ़्तर की यह चौकड़ी नहीं पंचकड़ी है... जनाब इकबाल हाशमी, सरदार हरजीत सिंह, मिस्टर जान लोबो, पंडित रघुनाथ शर्मा और श्री बी.आर. वर्मा पर... यह बी. आर. क्या हुआ? जब सभी के नाम पूरे-पूरे हैं तो वर्मा के "इनिशल" क्यों? पर यह भी सही है कि इसमें कोई कुछ नहीं कर सकता । वर्मा अपने आपको बी. आर. वर्मा ही कहलाना पसंद करता है ।

जब पांचों व्यक्ति अपना-अपना लंच बाक्स खोल लेते हैं तो किसी न किसी बात को लेकर बहस शुरू हो जाती है । जान लोबो यह कहकर भी अपनी बात शुरू कर सकता है – "यार वर्मा, तुम न बी. आर. हो, न वर्मा । तुम हो बुद्धराम कोरी। कोरी होने से तुम « शैड्यूल्ड कास्ट » में आ गए और आजकल शैड्यूल्ड कास्ट की तो है । पर यार तुम बी. आर. और वर्मा के पीछे अपनी असलियत कितने दिन छिपाते रहोगे ? मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुम खुलकर कहते क्यों नहीं कि मैं कोरी हूँ... ऐंड आय एम प्रोउड आफ़ इट..."

बस यूं समझिए कि लंच का पूरा वक़्त इसी चर्चा में निकल जाता है । वर्मा आर्यों और अनार्यों के संपूर्ण इतिहास को उन्हीं मिनटों में अपनी सब्ज़ी की कटोरी में समेट लेता है । वर्ण-व्यवस्था के नाम पर कुछ लोगों को अछूत बना दिए जाने की साजिश पर पूरा भाषण दे डालता है और कहता है – "मैं तो बी. आर. वर्मा ही लिखता हूँ । मेरा बेटा सीधे-सीधे अपने आपको ब्रह्म कुमार शर्मा लिखेगा।" यह कहकर रघुनाथ शर्मा की ओर मुड़ता है और मुस्कराता है ।

महफ़िल बर्खास्त होती है। हाशमी अपनी मेज़ का दराज़ से इलायची-सुपारी निकालकर सब को देता है और लोग अपनी-अपनी मेज़ों पर चले जाते हैं ।

इस पंचकड़ी में एक हिन्दू, एक मुसलमान, एक ईसाई, एक सिख और एक हरिजन होने का अर्थ नहीं है कि यह कोई देश की भावात्मक एकता बढ़ाने वाला दफ़्तर है । इसको एक संयोग मानना चाहिए ।

यह दफ़्तर किताबें प्रकाशित करने का एक बहुत बड़ा व्यावसायिक संस्थान है । यह संस्थान अनेक भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करता है। हर भाषा के अपने अपने संपादक हैं । पंडित रघुनाथ शर्मा हिन्दी के, जनाब इकबाल हाशमी उर्दू के, सरदार हरजीत पंजाबी के और मिस्टर लोबो अंग्रेज़ी के संपादक हैं । पहले यह संस्था एक ब्रिटिश फ़र्म का अंग थी । अब इस पर पूरी तरह भारतीयों का अधिकार है । *परन्तु ब्रिटिश लोगों ने जो परंपराएं डाली थीं, वह अभी तक चल चल रही है । यह भी शायद उसी परंपरा का एक अंग है कि मालिक लोग समझते हैं कि संस्कृत-हिन्दी का काम कोई ब्राह्मण ही कर सकता है, उर्दू का काम कोई मुसलमान ही कर सकता है, पंजाबी के लिए एक सिख होना चाहिए और अंग्रेज़ी किसी शुद्ध हिन्दुस्तानी के बस का रोग नहीं । उसके लिए ब्रिटिश व्यक्ति होना चाहिए। वह न हो तो एंग्लो इंडियन हो । और वह भी न हो तो कम से कम क्रिश्चियन तो होना ही चाहिए ।*

एक परिवर्तन ज़रूर आया है। पहले हिन्दी का संपादक गाँठ लगी चोटी वाला, धोती-कुर्ताधारी त्रिपुंडयुक्त पंडित होता था । उसी तरह उर्दू का संपादक 'मौलवीनुमा' और पंजाबी वाला 'ज्ञानीनुमा' होता था । अब यह बात नहीं रही है । अब लोग काफ़ी उदार हो गए हैं। यह बात अलग कि शर्मा, हाशमी और लोबो की शक्ल देखकर उन्हें हिन्दू, मुसलमान और ईसाई बताया जा सकता है । परन्तु इसमें संदेह नहीं कि ये पांचों लोग उदार हैं । (...)

यह स्थिति भी कम मज़ेदार नहीं । शर्मा दूसरों के लंच बाक्स में से अचार और सलाद – खीरा, गाजर, मूली, प्याज़ आदि ले लेता है। हाशमी के लंच बाक्स में अक्सर क़बाब होते हैं और हरजीत के लंच बाक्स में तली हुई कलेजियां। हाशमी हरजीत

की कलेजियां खा लेता है और हरजीत हाशमी के क़बाब खा जाता है । यहां दोनों अपने-अपने धार्मिक आदेशों की कुछ अवहेलना कर जाते हैं क्योंकि हाशमी के क़बाब हलाल किए हुए बकरे के मांस से बने होते हैं और सिखों में हलाल खाना वर्जित है। इसी तरह हरजीत की कलेजियां झटका किए हुए बकरे की होती है, जिसे मुसलमान नहीं खा सकता। खान-पान की इस ‘उदारता’ के बावजूद हाशमी और हरजीत के मन को एक शंका अंदर-ही-अंदर घेरे रहती है । हरजीत हलाल के बकरे के क़बाब खाने में जितना उदार तो हो गया है पर ‘बीफ़’ नहीं खा सकता । इसलिए वह कभी-कभी कह देता है – “यार हाशमी, तेरे क़बाब इतने लज़ीज़ होते हैं कि मैं उन्हें छोड़ नहीं सकता। पर कभी मुझे ‘बीफ़’ खिलाकर मेरा धर्म नष्ट न कर देना”

इस तरह हाशमी भी एक बात की ओर से पूरी तरह सतर्क है। वह हरजीत के लंच की कलेजी खा लेता है क्योंकि बकरे की कलेजी का स्वाद उसे हलाल या झटका किए जाने से नहीं बदलता। पर ‘पोर्क’ नहीं खा सकता। वह अक्सर कह देता है – “सुअर का माँस भी कोई इंसानों के खाने की चीज़ है... लाहौल विला कूवत...” (quelle horreur)

लोबो सब कुछ खा लेता है। वैसे उसका लंच बाक्स सिर्फ़ उसी का रहता है क्योंकि उसमें कभी टमाटर वाली, कभी चीज़ वाली और कभी-कभी हैम वाली सेंडविचेज़ होती हैं । वर्मा को दूसरों के लंच बाक्स से कुछ भी लेते संकोच होता है । वह अपने साथ सालाद खूब लाता है और उसे एक अखबारी कागज़ पर डालकर मेज़ के बीचों-बीच रख देता है । सब वहीं से लेकर खाते रहते हैं । हाशमी और हरजीत कभी-कभी अपने लंच बाक्स से क़बाब या कलेजी निकालकर उसके लंच बाक्स में डाल देते हैं ।

Vocabulaire et expressions

निश्चित décidé, arrêté

दफ़्तर, कार्यालय (m) bureau administratif,

चौकड़ी (f) quatuor,

साजिश (f) conspiration

पंचकड़ी (f) group de cinq

जनाब (m) monsieur

बहस (f) discussion, débat

शैड्यूल्ड कास्ट scheduled caste,

चर्चा (f) conversation, discussion

अनार्य non-aryens

भाषण (m) allocution,

महफ़िल (f), assemblée, réunion,

बर्खास्त clos, terminé,

दराज़ (m), tiroir,

संयोग (m) conjoncture/concours des circonstances

व्यावसायिक commercial

संस्थान (m) institut,

संपादक (m), éditeur,

परंपराएँ डालना instaurer des tradition,

त्रिपुंड (m) signe sur le front avec trois traits

युक्त muni de,

उदार généreux,

तलना frire,

कलेजियां (f) morceau de foie,

अवहेलना (f) négligence

वर्जित interdit

झटका किए गए animal tué d’un seul coup

शंका (f) doute

लज़ीज़ savoureux, goûteux,

नष्ट करना détruire,

सतर्क prudent,

संकोच (m) hésitation réticence, timidité